SURYA FOUNDATION

सूर्या फाउण्डेशन

आदर्श गाँव योजना

जल संरक्षण

महाभियान-2022

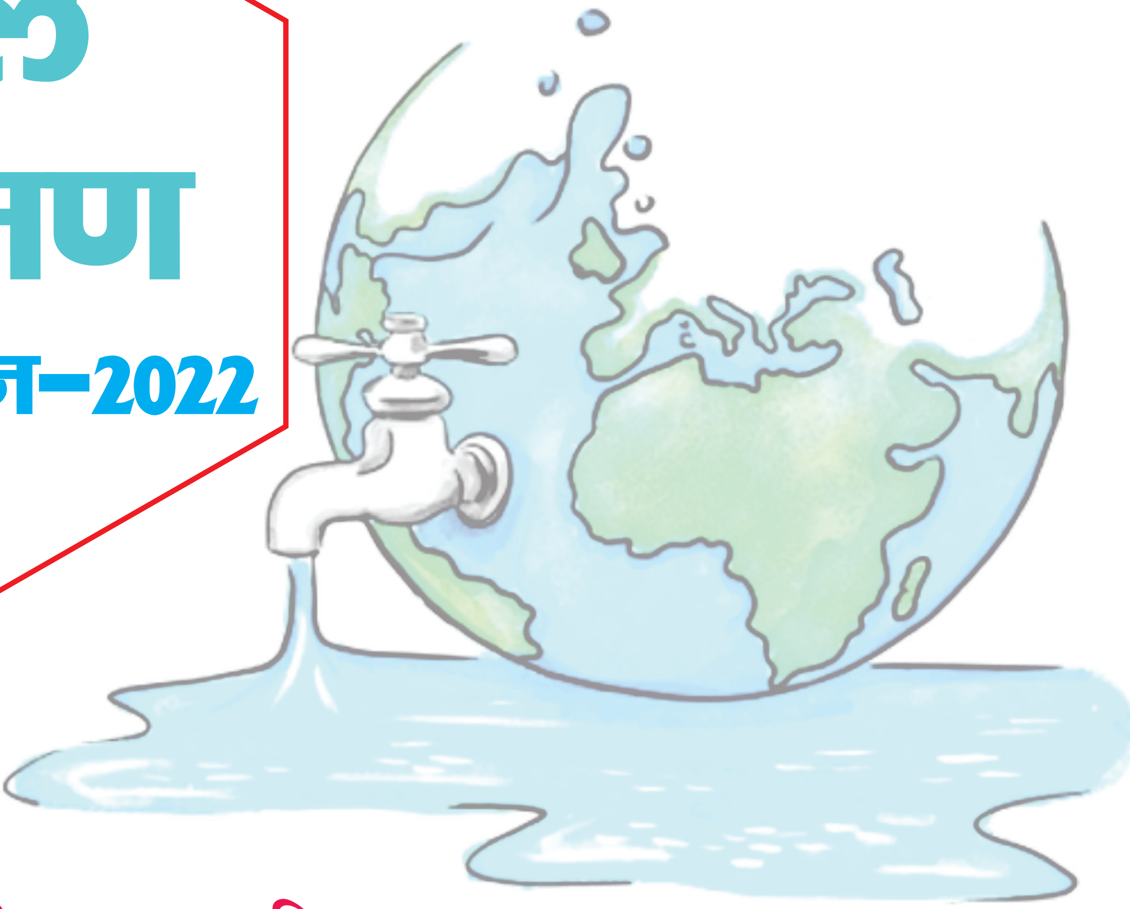

मेरा गाँव-मेरा मेरा बड़ा परिवार

जल है तो कल है!

जल ही जीवन है, धरती पर जीवन का सबसे जरूरी स्रोत जल है। वर्तमान समय में पूरा विश्व पीने योग्य पानी की कमी के संकट का हल खोजने में प्रयासरत है। भारत और दुनिया के दूसरे देशों में जल की भारी कमी है। आज एक ओर जहाँ आम लोगों को रोजमर्रा के कार्यों को पूरा करने हेतु पानी के लिये लंबी दूरी तय करनी पड़ती है। वहीं दूसरी ओर पर्याप्त जल के क्षेत्रों में अपने दैनिक जरुरतों से ज्यादा पानी लोग बर्बाद कर रहें हैं। हम सभी को उपयोगी जल को बर्बाद और प्रदूषित करने से रोकना होगा।

सूर्या फाउण्डेशन आदर्श गाँव योजना के अंतर्गत चलाए गये जल संरक्षण अभियान के तहत पूरे देश में विभिन्न प्रकार के प्रयास किये गये। इस साल 05 तालाबों का निर्माण, 06 तालाबों का गहरीकरण, 05 ऐनीकट बाँध, 22 किसानों द्वारा जल संरक्षण हेतु खेतों में मेड़बंदी, 05 डबरी/गड्ढों का निर्माण, बारिश के पानी को बचाने के लिए 05 सोख्ता गड्ढे का निर्माण, 20 छत के पानी के संग्रह हेतु वाटर टैंक और 04 वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम बनवाकर जल संरक्षण के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया गया।

सूर्या फाउण्डेशन- आदर्श गाँव योजना के तहत विभिन्न प्रकार के जल संरक्षण कार्यक्रम चलाये गये। सूर्या संस्कार केन्द्र के बच्चों द्वारा चित्रकला, संभाषण प्रतियोगिता और रैली के द्वारा जन-जागरण, सूर्या यूथ क्लब के युवाओं और सेवाभावियों द्वारा संगोष्ठी एवं संकल्प भी कराया गया।

आइये! हम भी संकल्प लें जल को बचाने का, उसके सवंर्धन का। जल है तो जीवन है।

अनुभव कथन

अजय खरसन
अभियान प्रमुख

> **रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।**
> **पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून ॥**

पानी की कमी दुनिया भर के देशों के लिए गंभीर चिंताओं में से एक है। 2019 में, चेन्नई ने अंतरराष्ट्रीय सुर्खियां बटोरीं, जब नगर निकायों ने **'डे जीरो'** घोषित किया, क्योंकि शहर में पानी खत्म हो गया और सभी जलाशय सूख गए, धरती पर जीवन का सबसे बड़ा स्रोत है जल क्योंकि हमें जीवन के सभी कार्यों को निस्पादित करने के लिए जल की आवश्यकता है। जैसे-पीने, भोजन बनाने, कपड़ा धोने, फसल पैदा करने आदि तमाम कार्यो के मानव व प्राणी जगत के लिए जल एक अमूल्य हीरे के समान है। बिना जल को प्रदूषित किए भविष्य की पीढ़ी के लिए जल की उचित आपूर्ति के लिए हमे पानी को बचाने की जरूरत है पानी को व्यर्थ में खर्च नहीं चाहिए।

सूर्या फाउण्डेशन 01 जुलाई से 31 अगस्त 2022 तक देशभर में जल संरक्षण अभियान चलाया गया है। इस वर्ष देशभर के 18 राज्यों के 400 गावों में 1000 पूर्णकालिक कार्यकर्ता, शिक्षक, सेवाभावी और गाँवों के प्रतिष्ठित लोगो, गाँव के प्रधान आदि के माध्यम से जल को बचाने के लिए गाँव-शहर में छोटे-छोटे कार्य जैसे मेडबंदी, सोखता गड्ढ़ा, वाटर हार्वेस्टिंग, तालाब निर्माण, छत का पानी संग्रह, बांध जलाशय निर्माण, एवं जन-जागरण हेतु किसानों के बीच गोष्ठी, गाँव में रैली, चित्रकला, जल बचाओ संकल्प आदि अनेको कार्य सूर्या फाउण्डेशन ने जल सरंक्षण के माध्यम से पूर्ण किया। जिसके परिणाम स्वरूप देशभर में अनेक कार्य देखने को मिला।

प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत सूर्या फाउण्डेशन की प्रेरणा से जयपुर जिले के आसपास के किसानों ने पानी का हौज (पानी का टैंक) बनवाकर वर्षा का पानी इकट्ठा किया। जिसका उपयोग फसल की सिंचाई में किया जाएगा।

मेरठ क्षेत्र के गाँव फफूण्डा में सरकारी नल जो खराब हो गए थे जिसका पानी गाँव की गलियों में व्यर्थ बहता रहता है। इस अभियान से प्रेरित होकर गाँव वालो ने स्वयं से 20 नल की मरम्मत कर टोंटी का निर्माण करवाया जिसे पानी व्यर्थ बहना बंद हुआ और पानी का उपयोग करने लगे।

मेरठ (उ.प्र.)

राजस्थान

जल संरक्षण का जीता जागता उदाहरण

''अमृत उत्सव'' बनाया गाँव नांदियाकल्ला

जोधपुर से करीब 70 किमी दूर स्थित नांदियाकल्ला गाँव जल संरक्षण के क्षेत्र में अकल्पनीय काम में लगा है। पानी के लिए तरसते इस गाँव के लोग वृक्षारोपण के साथ-साथ चंदा जुटाकर तालाब खोद रहे हैं और वर्षा जल संरक्षण कर भविष्य संवारने में जुटे हुए हैं। जात-पात से ऊपर उठकर समरसता भाव के साथ गाँव के विकास कार्य में लगी टीम बताती है कि पिछले चार सालों में पूरे गाँव में लगभग 6000 पौधे लगाए गए सभी पौधों की देखभाल के लिए गाँव में परिवारों को जिम्मेदारी दी गयी। जहाँ पानी की किल्लत हो वहाँ पेड़ों का संरक्षण करना आसान नहीं होता। जहाँ पौधों को जिंदा रखने की बात आई वहाँ सभी लोगों का साथ मिला। आजादी का अमृत महोत्सव के तहत गाँव में 75 पेड़ों में ईंट का घेरा बनाया गया जिससे इन पौधों की सुरक्षा हो इसके। असके साथ ही साथ चार नए तालाबों की खुदाई में गाँव वालों ने अब तक लगभग 5 लाख रुपये का सहयोग किया है। ट्रैक्टरों से मिट्टी बाहर निकाली गयी कुछ ट्रैक्टर मालिकों ने भी इस पुण्य कार्य में नि:स्वार्थ भाव से सहयोग किया।

इसी वर्ष गाँव के सबसे पुराने कल्याण सागर को गहरा किया गया। पूरा गाँव जल संरक्षण को लेकर बेहद सजग है। गाँव की महिलाओं के स्वयं सहायता समूह भी बनाए गए हैं जिनकी भागीदारी इन सब कामों में स्पष्ट देखने को मिलती है। आने वाले समय में इस गाँव में किए जा रहे कार्यो की चर्चा बड़े मंचो पर होने वाली है। नांदियाकल्ला जैसे टिकाऊ और जमीनी काम व कुदरत के साथ तालमेल वाले जीवन की बात दुनियां भर में सुनाई देगी ऐसे गाँव ही अन्य गाँवों के लिए प्रेरणा का केन्द्र बन रहे हैं इसमे कोई संशय नहीं है।

गाँव में जल संरक्षण हेतु चलाये जा रहे जन जागरण कार्य

संस्कार केन्द्र के बच्चों द्वारा रैली

गोष्ठी

जन सामान्य के बीच संकल्प

अभियान में लगे बंधुओं का सम्मान

चित्रकला प्रतियोगिता

जन जागरुकता हेतु किए गए कार्य

जागरूकता रैली– सूर्या संस्कार केन्द्र और यूथ क्लब के द्वारा गाँव–गाँव में जागरुकता रैली निकाली गई।

जल संरक्षण संगोष्ठी– जल संरक्षण जागरुकता हेतु गाँवों में ग्रामवासियों के सहयोग से गोष्ठियाँ करायी गयी।

संकल्प– गाँव में जल संरक्षण हेतु सूर्या यूथ क्लब के युवाओं, सेवाभावियों एवं माताओं–बहनों को जल संरक्षण हेतु संकल्प कराया गया।

चित्रकला प्रतियोगिता– जल संरक्षण के प्रति बच्चों में जागरुकता आये, इसके लिए पूरे देश में संस्कार केंद्र के बच्चों की जल संरक्षण विषय पर चित्रकला प्रतियोगिता करायी गयी।

संभाषण प्रतियोगिता– जल संरक्षण में जागरुकता लाने के लिए संस्कार केंद्र के भैया–बहनों की संभाषण प्रतियोगिता करायी गयी।

घर-घर संपर्क– गाँव–गाँव में फाउण्डेशन की टीम द्वारा घर घर जाकर जल संरक्षण के प्रति जागरुकता लाने के लिए संपर्क किया गया। कैसे जल बचा सकते हैं, इसके बारे में जानकारी दी गयी।

सम्मान समारोह– जल संरक्षण के क्षेत्र में विशेष योगदान देने वाले लोगों को सूर्या फाउंडेशन द्वारा पटका पहनाकर सम्मानित किया गया।

जल सरंक्षण हेतु किए गए कार्य

तालाबों का निर्माण कार्य	:	05
तालाबों का गहरीकरण कार्य	:	06
एनिकट बाँध व जलाशय का कार्य	:	04
खेतों में मेडबंदी का कार्य	:	22
सोख्ता गड्ढे का निर्माण	:	05
खेतों में गड्ढों का निर्माण	:	05
पानी संग्रह हेतु वाटर टैंक	:	20
वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम	:	04

पानी संग्रह हेतु वाटर टैंक

खेतों में गड्ढों का निर्माण

खेतों में मेड़बंदी

सोख्ता गड्ढे का निर्माण

दार्जिलिंग

तालाब निर्माण व गहरीकरण

दीनदयाल धाम (उ.प्र.)

वाटर टैंक निर्माण

गुजरात

वाटर हार्वेस्टिंग

हमारी प्रेरणा

70 परिवार अपने गाँव वापस लौटे
हिवरे बाजार - महाराष्ट्र

दो दशक तक सूखे की मार झेलने वाले गाँव हिवरे बाजार में आज कोई गरीब नहीं है। बारिश पर निर्भर इस गाँव ने यह दिखा दिया **जहाँ चाह, वहाँ राह।** इस मॉडल को महाराष्ट्र के 1000 गाँवों में अपनाया जा रहा है।

महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में स्थित हिवरे बाजार एक समृद्ध गाँव है। 1989 तक इस गाँव की पहाड़ियाँ व खेत बंजर हो चुके थे। लोगों के पास रोजगार नहीं था। गाँव में कच्ची शराब बनती थी, लोग पलायन करने लगे थे। तब गाँव के युवकों ने सुधार का बीड़ा उठाया और अपने एक साथी पोपटराव पंवार को सरपंच बनाया। पोपटराव ने सात सूत्री एजेंडा तैयार किया, जिसमें पेड़ कटाई पर रोक, परिवार नियोजन, नशाबंदी, श्रमदान, लोटाबंदी, हर घर में शौचालय व भूजल प्रबंधन शामिल थे।

पंवार बताते हैं कि उनके गाँव की औसत आय 30-35 हजार रुपये है, जो 1995 के पहले 830 रुपये थी। 1990 के दशक में जो लोग यह कहकर चले गए थे कि गाँव में कुछ भी नहीं बचा है। उनमें से 70 परिवार वर्ष 2000 के बाद वापस लौट आए हैं। गाँव में 50-60 लोगों की सालाना आय 10 लाख रुपए से अधिक है। यहाँ एक भी व्यक्ति गरीबी रेखा के नीचे नही है। यहाँ ढूँढने से भी मच्छर नहीं मिलेंगे।

वे बताते हैं कि जब गाँव में हरियाली आई तो पशुधन भी बढ़ा और डेयरी (मुंबा देवी मिल्क सोसायटी) का सहयोग भी मिलने लगा। स्वच्छता के साथ पिछले कुछ वर्षों में शिक्षा पर भी विशेष ध्यान दिया गया है।

इस गाँव के लोग पूर्ण साक्षर हैं और 79 प्रतिशत परिवारों के लोग सरकारी नौकरी करते हैं। गाँव में 38 प्राथमिक शिक्षक, 50 से अधिक ग्रामीण सेना में हैं। कुल मिलाकर गाँव की समृद्धि में कृषि, डेयरी के साथ नौकरी-पेशा लोगों का भी योगदान है।

पानी प्रकृति का अमूल्य तोहफा है।

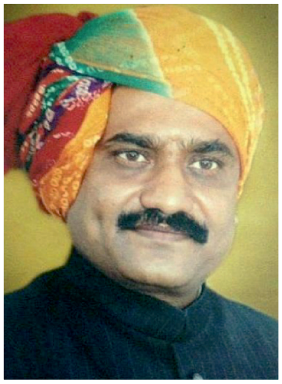

उमाकांत उमराव, *IAS*

देवास का भगीरथ

मध्य प्रदेश का गाँव गोरवा इन्दौर से करीब 60 किमी. दूर देवास जिले में आगरा–मुम्बई राष्ट्रीय राजमार्ग से थोड़ी सी दूरी पर है। सड़क से गाँव की ओर आते हुए इसके पानीदार होने का सबूत मिलते हैं। जैसे–जैसे गाँव की ओर बढ़ते हैं, वैसे–वैसे खेतों पर बने तालाब स्वागत में इस भीषण गर्मी के दौर में भी नीला–हरा पानी समेटे शीतलता का आभास कराते हैं। अब यहाँ घर–घर पानी, खेत–खेत तालाब हैं।

आज से करीब 10 साल पहले तक यह भी आम गाँवों की तरह ही था और जल संकट यहाँ की भी आम बात थी। किसान ट्यूबवेल खुदवाकर तंग आ चुके थे। किसान खेती छोड़कर देवास की फैक्टरियों में मजदूरी करने को बेबस थे। कुछ किसानों ने तो खेती बेचने का भी मन बना लिया था। खेती में पानी नहीं मिलने से किसान तो परेशान थे ही, गर्मी के दिनों में गाँव के लोगों को पीने के पानी की भी किल्लत होने लगी थी।

इन्हीं भीषण जल संकट के दिनों देवास के कलेक्टर बने उमाकांत उमराव। थोड़े ही दिनों में उन्होंने देखा कि पूरे जिले में पानी को लेकर हालत बहुत बुरी है। उन्होंने गाँव–गाँव जाकर देखा तो पता लगा कि जमीन का पानी धीरे–धीरे गहरा होता जा रहा है। ट्यूबवेल बैठने लगे हैं। इसके लिये कुछ बुनियादी काम करना पड़ेगा। तलाश शुरू हुई और बात रुकी तालाबों पर। तालाब हर दृष्टि से हितकारी लगे। पहल शुरू हुई कि कुछ खेतों के छोटे से हिस्से पर किसान खुद अपने लिये खेत में तालाब बनाएँ। इससे उन्हें खेती के लिये पानी भी मिलेगा और जलस्तर भी बढ़ेगा। यहाँ कभी ट्रेन से पानी भेजना पड़ा था।

2006 में जिले में रेवा सागर योजना भागीरथ किसानों के साथ प्रारम्भ की गई। जिले में इन तालाबों से 40 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में अतिरिक्त सिंचाई क्षमता निर्मित हुई है। गाँवों में आर्थिक बदलाव भी साफ नजर आ रहा है। 20 साल बाद फिर प्रवासी पक्षी जैसे साइबेरियन क्रेन दिखने लगे हैं।

गोरवा के सरपंच बताते हैं कि उनके गाँव के तालाबों को बीते दिनों महाराष्ट्र के सूखा प्रभावित लातूर और परभणी जिले के किसानों ने आकर इन्हें देखा, परखा। केन्द्रीय भूजल परिषद ने गाँव और इलाके में बने तालाबों का व्यापक अध्ययन किया और इसे पाँच बार राष्ट्रीय स्तर पर गाँवों को पुरस्कार भी मिले। न्यूजीलैंड की कृषि टीम भी यहाँ देखने आई थी।

बारिश के समय जल संरक्षण के उपाय

वर्षाजल को संचित करने के लिये निम्नलिखित उपाय किये जा सकते हैं। इन उपायों के द्वारा जमीन के अन्दर गिरते जलस्तर को ऊपर उठाया जा सकता है।

1. **सीधे जमीन के अन्दर:** इस विधि के अंतर्गत वर्षाजल को एक गड्ढे के माध्यम से सीधे भूजल भण्डार में उतार दिया जाता है।

2. **खाई बनाकर रिचार्जिंग :** इस विधि से बड़े संस्थान के परिसरों में बाउन्ड्री वाल के साथ-साथ बड़ी-बड़ी नालियाँ (रिचार्ज ट्रेंच) बनाकर पानी को जमीन के भीतर उतारा जाता है। यह पानी जमीन में नीचे चला जाता है और भूजल स्तर में संतुलन बनाए रखने में मदद करता है।

3. **कुओं में पानी उतारना :** वर्षाजल को मकानों के ऊपर की छतों से पाइप के द्वारा घर के या पास के किसी कुएँ में उतारा जाता है। इस ढंग से न केवल कुआँ रिचार्ज होता है, बल्कि कुएँ से पानी जमीन के भीतर भी चला जाता है। यह पानी जमीन के अन्दर के भूजल स्तर को ऊपर उठाता है।

4. **ट्यूबवेल में पानी उतारना :** भवनों की छत पर बरसाती पानी को संचित करके एक पाइप के माध्यम से सीधे ट्यूबवेल में उतारा जाता है। इसमें छत से ट्यूबवेल को जोड़ने वाले पाइप के बीच फिल्टर लगाना आवश्यक हो जाता है। इससे ट्यूबवेल का जल हमेशा एक समान बना रहता है।

5. **टैंक में जमा करना :** भूजल भण्डार को रिचार्ज करने के अलावा बरसाती पानी को टैंक में जमा करके अपनी रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा किया जा सकता है। इस विधि से बरसाती पानी का लम्बे समय तक उपयोग किया जा सकता है।

जल है अनमोल, इसका नहीं है कोई मोल।

जल संरक्षण के उपाय

वर्तमान में 70 प्रतिशत भाग पर जल है परंतु पीने योग्य पानी केवल 1 प्रतिशत है। जल की बचत निम्न प्रकार से की जाती है–

- पानी का समुचित उपयोग करें, नल खुला ना छोड़ें। टपकने वाले नलों को तुरंत ठीक करवायें।
- शौचालयों में शौच के लिए बड़ा फ्लश व लघुशंका के लिए छोटे फ्लश का उपयोग करें।
- स्नान के लिए शॉवर के स्थान पर बाल्टी का उपयोग करें। सेविंग के समय नल खुला ना रखें।
- स्नान का पानी कपड़े धोने में कपड़ों का पानी पेड़–पौधों में उपयोग करें।
- पानी पीते समय गिलास का उपयोग करना, पीने का पानी जूठा ना छोड़ें।
- आर.ओ. का व्यर्थ पानी रसोई के बर्तन धोने या बगीचे में उपयोग करना।
- सोख्ता गड्ढों का निर्माण करें।
- खेतों की मेड़बंदी करना, खेतों में क्यारी बनाकर सिंचाई करना।
- फव्वारे सिंचाई पद्धति से खेती करना, कम पानी वाली फसलों की खेती करना।
- बागवानी फसलों के लिए बूँद–बूँद सिंचाई वाली पद्धति का उपयोग करना।
- सिंचाई सुबह या शाम के समय ही करना।
- बगीचे में पानी सुबह या शाम के समय दें।
- उद्योगों में शुद्धिकरण के बाद पुनः उपयोग में लेना।
- वर्षा जल संरक्षण के लिए बांध व तालाबों का गहरीकरण, नए तालाबों का निर्माण करवाना।
- नदियों पर बाँधों का निर्माण करना।
- वर्षा के जल को पुराने कुओं व बोरवेल में पुनः भरना।
- सिंचाई के बाँधों के पानी को पाइप के द्वारा पक्की नाली के द्वारा खेतों में पहुँचाना।
- वर्षा जल को स्टोरेज (टैंकों) का निर्माण करवाना, नहर नेटवर्क में सुधार करना।
- पानी का रिसाव तथा पाइपलाइन गड़बड़ी को रोकना।
- वृक्षारोपण करना

जल जीवन का अनमोल रतन, इसे बचाने का करो जतन।

समाचार पत्रों में जल संरक्षण की झलकियाँ

जल संरक्षण के लिए सूर्या फाउंडेशन चला रहा जन जागरण अभियान

काशीपुर 4 अगस्त (मंटा संवाददाता)। हरियावाला चौराहा स्थित शिव मंदिर परिसर में सूर्या फाउंडेशन द्वारा कार्यकर्ताओं की मासिक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में वर्तमान समय में सूर्या फाउंडेशन द्वारा चलाये जा रहे जल संरक्षण के विषय पर चर्चा कर जन जागरण अभियान की शुरुआत की गई। सभी कार्यकर्ताओं द्वारा जल संरक्षण का संकल्प लिया गया। सूर्या फाउंडेशन द्वारा जल को बचाने के लिए जन जागरण अभियान के तहत लोगों को जागरूक किया जा रहा है। किसानों के साथ गोष्ठी कर खेतों की आधुनिक शिक्षण की विधियो को उपयोग में लेने तथा बागवानी खेती में ड्रिपसिस्टम उपयोग में लाने के लिए किसानों को प्रेरित किया जा रहा है। खेती में भी उन फसलों को बढ़ावा देने का आग्रह किया जा रहा है जो कम पानी में अधिक पैदावार दे सके। इसके साथ ही गांव में जनजागृति पैदा करने के लिए सूर्या संस्कार केंद्र व सूर्य यूथ क्लब के भैया बहनों के द्वारा जन जागरण रैली, ड्राइंग प्रतियोगिता व अनेक प्रकार की प्रतियोगिताओं के माध्यम से जन जागरण का काम किया जा रहा है। बैठक के दौरान 8 गांव के सूर्या यूथ क्लब व सूर्या संस्कार केंद्र के शिक्षक बंधु डिप्टी जॉन प्रमुख अजय, क्षेत्र प्रमुख नीतिश कुमार, भरत शाह, सुनील, रवि, प्रीतम, कृष्णा, लखविंदर, शिवस्वामी, दीपक, अवनीश, प्रशांत, सचिन, गौरव आदि उपस्थित रहे।

पौधरोपण और जल बचाओ अभियान

पाचगांव.

पाचगांव को आदर्श गांव सम्बोधित किया जाता हैं। सूर्या फाउंडेशन के कार्यकर्ताओं द्वारा बच्चों ने रैली का आयोजन किया गया। रैली में फाउंडेशन के कार्यकर्त्ता रामटेक की मयूरी वासनिक, शिक्षक रूपेश दुधानकर और शिक्षक देवीदास घुले, द्वारा जल सुरक्षा, जल बचाओ, पौधारोपण के लिए लोगों को जागरूक किया गया। इस अवसर पर चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें बच्चों ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया।

रैली में बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं ने शामिल होकर जल और पेड़ों का महत्व बताकर गांव के नागरिकों को जागरूक किया। इसी तरह सूर्या फाउंडेशन ने लोगों को जल ही जीवन है का संदेश दिया।

जल संरक्षण विषय पर चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित

भिण्ड। सूर्या फाउंडेशन आदर्श गांव योजना के द्वारा ग्राम सभा सर्वा में जल संरक्षण के विषय मे चित्रकला प्रतियोगिता का किया गया आयोजन । कार्यक्रम में संस्कार केंद्र के भैया बहनो ने भाग लिया प्रतियोगिता में बच्चों को उत्कृष्ट चित्र जल संरक्षण पर बनाने में पुरस्कृत भी किया गया । कार्यक्रम में सरपंच मायाराम जाटव द्वारा पुरुस्कार प्रदान किये गये। गया जिसमे प्रथम स्थान जतिन द्वितीय स्थान राज कुमार व तृतीय स्थान अनन्या पर रहे। कार्यक्रम में जनपद पंचायत सदस्य रामचरण श्रीवास ने ने बच्चों को जल संरक्षण करने के तरीकों की जानकारी दी एवं भविष्य में जल की उपयोगिता में बच्चों को एवं ग्राम वासियों को महत्वपूर्ण जानकारी दी सूर्या फाउंडेशन के जॉन इंचार्ज शत्रुघन ने कहा की जल संरक्षण हम सबकी जिम्मेदारी हैं जल का दुरुपयोग होने से हम सब ग्रामवासी व युवा जन ही बचा सकते हैं जल संकट दिन प्रतिदिन गहराता जा रहा है हमको जल के प्रति संवेदनशील एवं दुरुपयोग से बचना चाहिए। कार्यक्रम में सूर्या फाउंडेशन से अशोक कुमार ,नरसिंह तोमर एवं गांव के गणमान्य लोग आकाश , आनंद ,अंकित नीरज उपस्थित रहे।

जल संरक्षण के लिए सूर्या फाउंडेशन ने चलाया जन जागरण अभियान

काशीपुर एक्सप्रेस, काशीपुर

काशीपुर। हरियावाला चौराहा स्थित शिव मंदिर परिसर में सूर्या फाउंडेशन द्वारा कार्यकर्ताओं की मासिक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में वर्तमान समय में सूर्या फाउंडेशन द्वारा चल रहे जल संरक्षण के विषय पर चर्चा कर जन जागरण अभियान की शुरुआत की गई जिसमें सभी कार्यकर्ताओं द्वारा जल संरक्षण के लिए संकल्प लिया गया। हमारे यहां कहा गया है जल है, तो कल है। वर्तमान समय में जल को बचाना बहुत जरूरी है हमारे ही देश के कुछ राज्यों में जल की बहुत बड़ी समस्या है। सूर्या फाउंडेशन द्वारा जल को बचाने के लिए जन जागरण अभियान के तहत लोगों को जागरूक कर उनसे छोटे-छोटे कार्य किए जा रहे हैं। किसानों के बीच में गोष्ठी करके खेतों की आधुनिक शिक्षण की विधियो को उपयोग में लेने तथा बागवानी खेती में ड्रिपसिस्टम उपयोग में लाने के लिए किसानों को प्रेरित किया जा रहा है। खेती में भी उन फसलों को बढ़ावा देना जो कम पानी में अधिक पैदावार दे सके। इसके साथ ही गांव में जनजागृति पैदा करने के लिए सूर्या संस्कार केंद्र व सूर्य यूथ क्लब के भैया बहनों के द्वारा जन जागरण रैली ड्राइंग प्रतियोगिता व अनेक प्रकार की प्रतियोगिताओं के माध्यम से जन जागरण का काम किया जा रहा है। इसके साथ ही जल संरक्षण के क्षेत्र में कार्य करने वाले बंधुओं को सम्मानित भी किया जा रहा है। जल संरक्षण के छोटे-छोटे उपाय जिसमें वृक्षारोपण महा अभियान चलाकर अधिक पौधे लगाए जल संरक्षण हेतु दीवार लेखन आदि से जन जागरण करना जो अपने दैनिक जीवन में पानी का उपयोग करते हैं जैसे दाढ़ी बनाते या मंजन करते समय जरूरत ना होने पर पानी के नल को बंद करें, शौचालय में प्लेस के स्थान पर बाल्टी और मग का उपयोग करें, खुले स्थान पर पानी के नलों को बंद कर दे अपने बगीचे में शाम या सुबह के समय जल का छिड़काव करते समय जरूरत से ज्यादा पानी ना डालें खराब नलों को तुरंत ठीक करवाएं बूंद बूंद से बहुत ज्यादा पानी वह जाता है जिसका हमें पता नहीं चलता अपने घरों की छत से बारिश के पानी को रोकने के लिए वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम के माध्यम से पुन: धरती में पानी को पहुंचाएं, घरों में फिल्टर से निकलने वाले खराब पानी का उपयोग पौधे में डाले या कपड़े धोने में करें। गांव में तालाबों का गहरीकरण करके पानी इकट्ठा करना इत्यादि उपायों से हम कल के लिए जल संरक्षण कर सकते हैं। इस बैठक के दौरान 8 गांव के सूर्या यूथ क्लब वह सूर्या संस्कार केंद्र के शिक्षक बंधु डिप्टी जॉन प्रमुख अजय, क्षेत्र प्रमुख नीतिश कुमार, भरत शाह, सुनील, रवि, प्रीतम, कृष्णा, लखविंदर, शिवस्वामी,दीपक, अवनीश, प्रशांत, सचिन, गौरव आदि उपस्थित रहे।

सूर्या फाउंडेशन द्वारा जल संरक्षण के विषय में चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित

मालनपुर। सूर्या फाउंडेशन आदर्श गांव योजना के द्वारा ग्राम सभा सर्वा में जल संरक्षण के विषय मे चित्रकला प्रतियोगिता का किया गया आयोजन । कार्यक्रम में संस्कार केंद्र के भैया बहनों ने भाग लिया प्रतियोगिता में बच्चों को उत्कृष्ट चित्र जल संरक्षण पर बनाने में पुरस्कृत भी किया गया। कार्यक्रम में सरपंच मायाराम जाटव के द्वारा पुरुस्कार दिया गया जिसमें प्रथम स्थान जतिन द्वितीय स्थान राज कुमार व तृतीय स्थान पर अनन्या रहीं। कार्यक्रम में जनपद पंचायत सदस्य रामचरण श्रीवास ने बच्चों को जल संरक्षण करने के तरीकों की जानकारी दी एवं भविष्य में जल की उपयोगिता में बच्चों को एवं ग्राम वासियों को महत्वपूर्ण जानकारी दी सूर्या फाउंडेशन के जॉन इंचार्ज शत्रुघन ने कहा की जल संरक्षण हम सबकी जिम्मेदारी है जल का दुरुपयोग होने से हम सब ग्रामवासी व युवा जन ही बचा सकते हैं जल संकट दिन प्रतिदिन गहराता जा रहा है हमको जल के प्रति संवेदनशील एवं दुरुपयोग से बचना चाहिए कार्यक्रम में सूर्या फाउंडेशन से अशोक कुमार ,नरसिंह तोमर एवं गांव के गणमान्य लोग आकाश, आनंद, अंकित नीरज उपस्थित रहे।